05 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

वरदानी, महादानी और दानी

आत्मा होने का अनुभव

➢➢ मैं वरदानी, महादानी, दानी आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मैं मस्तक पर चमकता हुआ सितारा बैठी हूँ परमधाम में.. ज्ञान सूर्य के सम्मुख...

→ ना इस देह का सुध और ना ही इस देह की दुनिया का सुध..

→ सिर्फ और सिर्फ शांति ही शांति...

→ ज्ञान सूर्य की तेजोमय किरणें मुझ पर बरस रही हैं...

■ एक-एक किरण मुझ आत्मा में समा रही हैं...

■ इन किरणों को मैं आत्मा स्वयं में महसूस कर रही हूँ...

➳ _ ➳ सारे खजानों से मैं आत्मा भरपूर हो रही हूँ...

→ सारे दिव्य गुण मुझ आत्मा में समा रहे हैं...

■ मैं आत्मा दिव्य गुणधारी बन रही हूँ...

→ बाबा से सारी दिव्य शक्तियां मुझमें जमा हो रही हैं...

■ मैं आत्मा मास्टर सर्व शक्तिवान बन रही हूँ...

→ मैं आत्मा सारे खजानों को स्वयं में जमा कर सम्पन्न बन रही हूँ..

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा के साथ विश्व की परिक्रमा पर निकलती हूँ...

→ मैं आत्मा सारे विश्व का चक्र लगा रही हूँ...

■ चारों ओर दुखी, अशांत, तडपती आत्माएं पुकार रही हैं...

■ रहम के लिए चिल्ला रही हैं...

■ अनेक प्रकार के बन्धनों से मुक्ति मांग रही हैं...

■ अपने गंतव्य से भटक कर सहारा ढूंढ रही है...

➳ _ ➳ मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ. . .

→ मैं आत्मा विश्व कल्याणकारी की स्टेज पर स्वयं को स्थित करती हूँ...

→ पूरा विश्व ही मेरा अलौकिक परिवार है...

→ सभी आत्माएं मेरे भाई हैं...

→ हम सब एक ही परमपिता के संतान हैं...

→ ये बेहद का परिवार है...

→ जैसे मैं आत्मा अपने सत्य पिता को पहचान गई हूँ...

→ उनकी सारी शक्तियों और खजानों की मालिक बन गई हूँ...

■ मुझे विश्व की आत्माओं को भी अपने पिता से मिलाना है...

■ उनको सच्चा रास्ता बताना ये मेरा ही कर्तव्य है...

■ मैंने जो पाया अपने आत्मा भाईयों को देकर उनको सशक्त बनाना है...

➳ _ ➳ मैं वरदानी, महादानी आत्मा हूँ...

→ मैं आत्मा वरदाता की संतान हूँ...

→ मैं मास्टर रचता हूँ...

→ मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ...

■ मैं आत्मा चारों ओर के अंधकार को दूर कर रही हूँ...

■ सभी दुखी, अशांत आत्माओं को सुख, शांति की किरणें दे रही हूँ...

▶ सभी आत्माएं सुख, शांति का अनुभव कर रही हैं...

→ मास्टर लिबरेटर बन सभी आत्माओं को बन्धनों से लिबरेट कर रही हूँ...

■ सबके तन के दुःख दूर हो रहे हैं...

■ सम्बन्ध के वशीभूत आत्माएं बन्धनों से मुक्त हो रही हैं...

■ इच्छाओं के वशीभूत आत्माएं स्वयं को संपन्न महसूस कर रही हैं...

■ सभी आत्माएं अनेक प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर हर्षित हो रही हैं...

→ मैं आत्मा सबको शुभ भावनाएं, शुभ कामनाएं दे रही हूँ...

■ मैं रहमदिल बन सब पर रहम करते जा रही हूँ...

→ अपने जमा किए हुए खजानों का दान कर रही हूँ...

■ सभी आत्माएं ज्ञान, गुण, शक्तियों के खजानों से भरपूर हो रही हैं...

■ सभी सुखी और संतुष्ट हो रहे हैं...

➳ _ ➳ विश्व की आत्माएं अपने पिता को पहचान रही हैं...

→ सभी आत्माएं प्रभु-प्राप्ति मिलने की ख़ुशी में नाच रही हैं...

→ भटकती आत्माओं को राह मिल गया है...

→ अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया है...

→ सबको अपनी मंजिल समीप दिखाई दे रही है...

→ सभी अपने दुःखदायी स्वभाव-संस्कारों से मुक्त हो रही हैं...

→ सभी परेशानियों से मुक्त होकर संतुष्टता का अनुभव कर रही हैं...

■ मैं आत्मा वरदानी बन जितना खजानों का दान कर रही हूँ, मेरे खजाने स्वतः ही बढ़ते जा रहे हैं...

■ मैं आत्मा सबकी दुआएं प्राप्त कर रही हूँ...

▶ और विश्व का मालिक बनने की अधिकारी बनती जा रही हूँ...